प्राचीन भारत में दुर्भिक्ष : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ० कुमारी रिचा

उपनिषद् में टिडिड्यिों द्वारा फसल के नष्ट होने के फलस्वरूप पड़ने वाले दुर्भिक्ष का उल्लेख मिलता है। इस दुर्भिक्ष के ही कारण ऋषि चाक्रायण को कुरू प्रदेश छोड़कर अन्यत्र जाना पड़ा तथा कुल्माष खाकर जीवन–यापन करना पड़ा। अतः दुर्भिक्ष के कारण लोगों को अपना घर छोड़कर अन्यत्र जाना पड़ता था तथा मांस इत्यादि भी खाना पड़ता था।

दुर्भिक्ष पीड़ित व्यक्तियों के द्वारा साँप का मांस खाने का उल्लेख मिलता है। सुत्रनिपात में वैशाली के नागरिकों को सूखा तथा प्लेग से बचाने के लिए भूतों की पूजा करने का उल्लेख मिलता है। दुर्भिक्ष के समय जनता खाद्य वस्तुओं के उपयोग समझ–बूझकर करती थी तथा संघ के कुछ चुने भिक्षुओं को ही भोजन करती थी।